आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 18-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को अंतर्मुखी अवस्था बनाने कि शिक्षा देकर, स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन कराने वाले, बेहद के बापदादा ने कहा, मीठे बच्चे – तुम्हारी चलन बहुत रॉयल चाहिए, तुम देवता बन रहे हो तो लक्ष्य और लक्षण, कथनी और करनी समान बनाओ. हम ब्राह्मण आत्माओं का लक्ष्य है दैवी-देवता बनना. लेकिन इसके लिए बाप की याद से कर्मातित अवस्था को पाना और कर्मातित होने से पहले आत्मा को दैवी-गुणों वाली बनाना. हम सब पुरुषार्थ कर रहे है कर्मातित अवस्था को पाने का. इसके लिए बापदादा की आज की मुरली अनुसार नीचे बताई बातों पर हमारा पुरुषार्थ होना चाहिए.

१. अंतर्मुखी रहना.
२. पुरानी दुनिया से सम्पूर्ण वैराग्यता.
३. सर्व-सम्बन्ध एक बाप से अनुभव करना. नष्टो मोहा बनना.
४. निरंतर बाप कि याद से सदा खुशी में रहना.

१. अन्तर्मुखी अवस्था बनाने के लिए बाबा ने कहे महा-वाक्यों --

- बाप बच्चों को बहुत प्यार से शिक्षा भी देते रहते हैं क्योंकि बच्चों को सुधारना बाप वा टीचर का ही काम है. बाप की श्रीमत् से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो. यह भी बच्चों को अपने चार्ट में देखना चाहिए कि हम श्रीमत् पर चलते हैं वा अपनी मनमत पर? श्रीमत् से ही तुम एक्यूरेट बनेंगे.
- जितनी बाप से प्रीत बुद्धि होगी उतनी गुप्त खुशी से भरपूर रहेंगे. अपनी दिल से पूछना है हमको इतनी कापारी खुशी है? अव्यभिचारी याद है? कोई तमन्ना तो नहीं है? एक बाप की याद है?
- स्वदर्शन चक्र फिरता रहे तब प्राण तन से निकलें. एक शिवबाबा दूसरा न कोई. यही अन्तिम मंत्र है?
- बापदादा कहते है तुम बच्चों की चलन बड़ी रॉयल होनी चाहिए. अपने आप को देखना है देवताओं मिसल हमारी चलन है? देवताई दिमाग रहता है? जो लक्ष्य है वह बन भी रहे हैं या सिर्फ कथनी ही है? जितना अंतर्मुख हो इन बातों पर विचार करेंगे तो बहुत खुशी रहेगी.

- बापदादा कहते है तुम्हें अभी स्वर्ग से भी यहाँ जास्ती खुशी रहनी चाहिए क्योंकि स्वर्ग स्थापन करने वाला बाप मिला तो सबकुछ मिल गया. परवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले बाप की वह मिल गया, बाकी किसकी परवाह! यह सदैव नशा रहना चाहिए. बहुत रॉयल, मीठा बनना है. अपनी तकदीर को ऊंच बनाने का अभी ही समय है. पदमापदमपति बनने का मुख्य साधन है - कदम-कदम पर खबरदारी से चलना. अंतर्मुखी बनना.
- ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, उससे अपनी जांच करते रहो. जो भी डिफेक्ट हो उनको निकाल प्युअर डाइमन्ड बनना है. थोड़ा भी डिफेक्ट होगा तो वैल्यु कम हो जायेगी इसलिए मेहनत कर अपने को वैल्युबुल हीरा बनाना है.

२. पुरानी दुनिया से सम्पूर्ण वैराग्यता दिलाने के लिए कहे गये महा-वाक्यों --

- बाप हमको इस पुरानी दुनिया से नई दुनिया में ले जाते हैं. यह पुरानी दुनिया तो अब खलास हुई कि हुई. यह तो अब कोई काम की नहीं है. कल्प-कल्प बाप हमारे लिए नई दुनिया बनाते है. हम कल्प-कल्प नर से नारायण बनते हैं.
- यह तुम बच्चे जानते हो कि इस पुरानी दुनिया से उस नई दुनिया में जाने का थोड़ा समय ही बाकी है. जब उस पुरानी दुनिया को छोड़ दिया तो फिर पिछाड़ी में क्यों देखें! यह भी बुद्धि से काम लेना है. बीती हुई बातों का चिंतन मत करो.
- इस पुरानी दुनिया की कोई भी आश न रहे. अब तो एक ही श्रेष्ठ आश रखनी है - हम तो चले सुखधाम. कहाँ भी ठहरना नहीं है. देखना नहीं है. आगे बढ़ते जाना है. एक तरफ ही देखते रहो तब ही अचल-अडोल स्थिर अवस्था रहेगी.
- इस पुरानी दुनिया कि हालते तो बिगड़ती जाती हैं. तुम्हारा इससे कोई कनेक्शन नहीं. तुम्हारा कनेक्शन है नई दुनिया से, जो अब स्थापन हो रही है.
- बाप ने समझाया है, अभी तुम्हारा ८४ का चक्र पुरा हुआ. अब यह पुरानी दुनिया खत्म होनी ही है, इसकी बहुत सीरियस हालत है. अभी तो प्राकृतिक आपदायें होगी. मनुष्य भूखों मरेंगे. इसमें दोष किसी का भी नहीं है. विनाश तो होने का ही है इसलिए तुम्हें अब इस पुरानी दुनिया से अपना बुद्धि योग हटा देना है.

३. सर्व-सम्बन्ध एक बाप से अनुभव करना. नष्टो मोहा बनाने के लिए कहे गये महा-वाक्यों --

- बाप रुहानी बच्चों से पुछते हैं मीठे बच्चे, जब बापदादा को सामने देखते हो तो बुद्धि में आता है कि यह हमारा बाबा, बाप भी है, शिक्षक भी है, सतगुरु भी है.
- तुम्हारी अब है वानप्रस्थ अवस्था. मोस्ट बिलवेड बाप मिला है उनको ही सदा याद करना है. बाप के बदले देह को वा देहधारियों को याद करना - यह भी भूल है. तुम्हें आत्म-अभिमानी बनने की, शीतल बनने की बहुत मेहनत करनी है.
- मीठे बच्चे, इस अपनी लाइफ से तुम्हें कभी भी तंग नहीं होना चाहिए. यह तुम्हारी जीवन बहुत अमूल्य गाई हुई है, इनकी सम्भाल करनी है. जितना समय मिले पुरुषार्थ करो कर्मातित बनने का. बच्चों में नष्टोमोहा बनने की भी बड़ी हिम्मत चाहिए. बेहद के बाप से पुरा वर्सा लेना है तो नष्टोमोहा भी बनना पड़े. अपनी अवस्था को बहुत ऊंच बनाना है.
- मीठे बच्चे, अब बेहद के बाप और बेहद सुख के वर्से से सम्बन्ध रखो. एक ही बेहद का बाप है जो बन्धन से छुड़ा-कर तुम्हें अलौकिक सम्बन्ध में ले जाते हैं. सदैव यह स्मृति रहे कि हम ईश्वरीय सम्बन्ध में हैं. यह ईश्वरीय सम्बन्ध ही सदा सुखदाई है.

४. निरंतर बाप कि याद से सदा खुशी में रहने के लिए कहे गये महा-वाक्यों --

- बच्चे जानते है हमारा सच्चा-सच्चा सतगुरु बाबा एक ही है. जिसका नाम भक्ति में भी चला आता है. जिसकी ही वाह-वाह गाई जाती है. तुम बच्चे कहेंगे - वाह सतगुरु वाह! वाह तकदीर वाह! वाह ड्रामा वाह! बाप के ज्ञान से हमको सद्गति मिल रही है.
- बेहद के बापदादा दोनों का मीठे-मीठे रुहानी बच्चों में बहुत रुहानी लव है. बच्चों को कितना लव से पढ़ाते है और क्या से क्या बनाते हैं! तो बच्चों को कितना खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए. लेकिन खुशी का पारा चढ़ेगा तब जब बाप को निरन्तर याद करते रहेंगे.
- बाप कल्प-कल्प बहुत प्यार से बच्चों को पावन बनाने की सेवा करते हैं. 5 तत्वों सहित सबको पावन बनाते हैं. कौड़ी से हिरे जैसा बनाते हैं. कितनी बड़ी सेवा करते हैं.

शुक्रिया बापदादा, आपका पदमापदम शुक्रिया. ॐ शांति.

- Atma Bhai. A.brahmin.soul@gmail.com